भगवान तुम्हारे बिना रह नहीं सकता...
यह कम बात है क्या ?

1. स्वयं भगवान अब तुम्हारे ऊपर बलिहार हो गया है। वो अभी तुम्हारे बिना रह नहीं सकता.....।
2. स्वयं भगवान तुम्हारी परिक्रमा करता है, तुम्हारे भाग्य का गुणगान करता है, तुम्हें देख हर्षित होता है।
3. वो तुम्हारे बुलाने पर तुम्हारा साथ निभाने के लिए, सेवा के लिए तुरन्त हाजिर हो जाता है।
4. वो तुम्हारे प्रेम और अधिकार की सूक्ष्म रस्सी में बंध चुका है।
5. बिना किसी शर्त के उसने अपनी सारी शक्तियां उपहार स्वरूप तुम्हें भेंट कर दी हैं।
6. उसने हर समस्या के समाधान के लिए तुम्हें सारा ज्ञान दे दिया है।
7. उसने याद की यात्रा अथवा राजयोग की सरल से सरल से युक्तियां तुम्हें बता दी हैं।
8. उसने अपने सर्व खजानों को जमा करने की चाबी तुम्हें सौंप दी है।
9. वो तुम्हारी छत्रछाया बनकर तुम्हें हर प्रकार की माया से सुरक्षित रखता है।
10. उसने तुम्हें अपना राइट हैण्ड बनाकर तुम्हारे पर कितना विश्वास रखा है।
11. तुम्हें ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देकर कितना निश्चिन्त बना दिया है।
12. स्वयं भगवान हर पल तुम्हारे साथ रहने को राजी हो गया है।
13. वो सतशिक्षक बनकर तुम्हें मनुष्य से देवता बनाने की पढ़ाई पढ़ा रहा है।
14. तुम्हें उसने विकारों की जलती हुई अग्नि से निकाल कर कितनी राहत प्रदान की है।
15. उसने तुम्हारा जीवन पवित्रता, सुख, शान्ति से संपन्न कर तुम्हें उदाहरणमूर्त बना दिया है।
16. उसने तुम्हें ज्ञान और योग के पंख लगाकर तीनों लोकों में उड़ना सिखा दिया है।
17. तुम्हें शरीर से डिटैच अशरीरी, न्यारा, उपराम, देही, विदेही रहने की कला सिखा दी है।
18. तुम्हारे में उसने ज्ञान का जौहर भर दिया। तुम्हें मुख से ज्ञान के हीर मोती बरसाने की विधि सिखा दी है।
19. तुम्हें पवित्रता की रोशनी से भरपूर कर जग को सकाश देना सिखा दिया है।
20. तुम्हें उसने कुंभीपाक, रौरव नरक से निकाल अपने नयनों में समा लिया है।
21. उसने तुम्हारे जन्म-जन्म के दु:ख हर लिये हैं, तुम्हें मास्टर सुखदाता बना दिया है।
22. उसने तुम्हारे सारे बोझ उठाकर तुम्हें डबल लाइट फरिश्ता बना दिया है।
23. तुम्हें देवताओं से भी ऊंच ब्राह्मण कुल का सर्वश्रेष्ठ भाती बना दिया है।
24. तुम्हें ऑलराउंड सर्विस में तन-मन-धन, समय, श्वांस, संकल्प को सफल करना सिखा दिया है।
25. तुम्हारें में कोई कमी न देख उसने तुम्हें कमाल के कार्य करने सिखा दिये हैं।
26. तुम्हें मलेच्छ बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि, पारस बुद्धि, विशाल बुद्धि बना दिया है।
27. तुम्हारे में असंख्य विशेषतायें भरकर उसने तुम्हें विशेष आत्मा बना दिया है।
28. स्वयं भगवान हर रोज तुम्हें निहारता है, तुम्हारी पालना करता है। तुम्हें देख-देख खुश होता है।
29. तुम्हें स्वयं परमात्मा सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराकर तुम्हें अतिन्द्रियसुख का अनुभव करा रहा है।
30. संसार के सर्वोच्च कार्य विश्वकल्याण के लिए तुम्हारा चयन स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने किया है।
31. ऊंचे ते ऊंची अथॉरटी स्वयं भगवान तुम्हारा हो गया है। उसने तुम्हें हर बात में अथॉरटी बना दिया है।

ओम् शान्ति